

डॉ. ट्रेम्पर लॉन्गमैन, ईश्वर एक योद्धा है, सत्र 3, चरण 1: ईश्वर इस्राएल के हाड़-माँस के शत्रुओं से लड़ता है; चरण 2: ईश्वर इस्राएल से लड़ता है

© 2024 ट्रेम्पर लॉन्गमैन और टेड हिल्डेब्रांट

यह ईश्वर एक योद्धा है पर अपनी शिक्षा में डॉ. ट्रेम्पर लॉन्गमैन हैं। यह सत्र 3, चरण 1 है: ईश्वर इज़राइल के मांस और रक्त शत्रुओं से लड़ता है; चरण 2: ईश्वर इस्राएल से लड़ता है।

इसलिए, यह पता लगाने के बाद कि पुराना नियम हमें युद्ध के पहले, उसके दौरान और बाद में क्या हुआ था, इसके बारे में बताता है, इसने हमें पुराने नियम में युद्ध की धार्मिक प्रकृति से अवगत कराया, साथ ही इसने हमें कम से कम झलक पाने का मौका दिया।, कुछ लड़ाइयों को मैं चरण एक के अंतर्गत रखूंगा, जो उन लड़ाइयों के उदाहरण हैं जहां भगवान इज़राइल के मांस और रक्त दुश्मनों से लड़ते हैं। लेकिन मैं अब कुछ और उदाहरण देखना चाहता हूं और शुरुआत से शुरुआत करना चाहता हूं, जिससे मेरा मतलब भगवान की युद्धकारी गतिविधि की शुरुआत से है। और इसके लिए एक पृष्ठभूमि प्रदान करने के लिए, निश्चित रूप से, आइए उत्पत्ति 1 और 2 के शुरुआती अध्यायों पर वापस जाएं, जहां हमें एक योद्धा के रूप में भगवान का कोई संकेत नहीं मिलता है, मैं सुझाव दूंगा, जो दिलचस्प है क्योंकि प्राचीन निकट पूर्व में, सृष्टि कहानियों के केंद्र में अक्सर एक संघर्ष होता था, जहां निर्माता भगवान, चाहे वह बेबीलोन का मर्दुक हो या कनान का बाल, उन देवताओं से लड़ता था जो पानी का प्रतिनिधित्व करते थे, बेबीलोन में तियामत, और यम और यम के समूह, जिनमें लोथन भी शामिल था, जो मूल रूप से है लेविथान का युगेरिटिक समकक्ष।

और इसी संघर्ष से सृष्टि का उदय हुआ। लेकिन आपको उत्पत्ति 1 और 2 में संघर्ष का संकेत नहीं मिलता है। ईश्वर एक अव्यवस्थित रचना लेता है और उसे कुछ ऐसा आकार देता है जिसे मेरे मित्र जॉन वाल्टन कार्यात्मक, रहने योग्य, संगठित व्यवस्था कहेंगे। लेकिन वह ऐसा एक योद्धा की तुलना में एक कलाकार या मूर्तिकार की तर्ज पर अधिक करता है।

लेकिन निश्चित रूप से, उत्पत्ति 2 के अंत में, मैं स्थिति का वर्णन इस प्रकार करूंगा कि मनुष्य, ईश्वर की रचना, ईश्वर के साथ सद्भाव में रह रहे हैं, एक-दूसरे के साथ सद्भाव में हैं, और स्वयं सृष्टि के साथ भी सामंजस्य में हैं। लेकिन निश्चित रूप से, फिर हम उत्पत्ति 3 की ओर मुड़ते हैं, और हमारे पास साँप की उपस्थिति होती है। अब, साँप की उत्पत्ति पर बहस चल रही है।

मैं उसमें नहीं पड़ने वाला। लेकिन साँप निश्चित रूप से एक द्वेषपूर्ण शक्ति है जो आदम और हव्वा को परमेश्वर के प्रति उनकी आज्ञाकारिता से दूर करने की कोशिश कर रहा है और सफल हो रहा है। तो, उत्पत्ति 3 में हमारे पास पाप का परिचय है, जैसा कि पॉल हमें बाद में रोमियों 5:12 और उसके बाद बताएगा।

और परिणाम है एक नये प्रकार की अव्यवस्था, अराजकता। और इसलिए, आपके पास परमेश्वर है जो आदम और हव्वा का न्याय कर रहा है, लेकिन उन्हें कपड़ों के रूप में अनुग्रह का प्रतीक

भी दे रहा है। और फिर अध्याय के अंत में, हमें एक योद्धा के रूप में भगवान की पहली तरह की झलक मिलती है जो एक आध्यात्मिक सेना की कमान संभालते हैं, जब छंद 23 और 24 कहते हैं, तो करूब दिलचस्प आंकड़े हैं।

मैंने पहले इस बारे में बात की थी कि कैसे भगवान सेनाओं के भगवान थे, स्वर्गीय सेना के भगवान थे। तो देवदूत उनकी सेना हैं। अब, मैं अक्सर अमेरिकी दर्शकों के सामने करूबिम का वर्णन भगवान की स्वर्गीय सेना की सील टीम छह के रूप में करूंगा।

और हमने पहले इस बारे में बात की थी कि कैसे पुजारी आध्यात्मिक स्तर पर भगवान की पवित्रता के संरक्षक थे। यह देवदूत और विशेष रूप से करूब हैं जो उसके बहुत करीब हैं। और इसलिए, उसने अब करूबों को ईडन गार्डन के प्रवेश द्वार की सुरक्षा के लिए रख दिया है।

पुनः, उसी प्रकार बाद में जहां कुछ लेवी पवित्र पवित्रस्थान के द्वारपाल होंगे। तो, यह पहला संकेत है कि अब जब पाप दुनिया में आ गया है तो भगवान एक योद्धा है। और जैसा कि मैंने पहले कहा था जब हम अपना सर्वेक्षण कर रहे थे और उत्सव पर ध्यान केंद्रित कर रहे थे, निर्गमन 15, श्लोक 3 को पढ़ने से पहली बार भगवान को स्पष्ट रूप से एक योद्धा कहा गया है।

लेकिन इसका संकेत हमें उत्पत्ति की पुस्तक में भी मिलता है, न केवल यहां उत्पत्ति 3 में, बल्कि यह एक संकेत है, लेकिन यह निश्चित रूप से उत्पत्ति 14 में है। उत्पत्ति 14 इब्राहीम के बारे में कहानी है जो पूर्व के इन चार राजाओं का पीछा कर रहा है जो आए हैं में और कनान को लूटा और लूत का अपहरण कर लिया। और इसलिए इब्राहीम ने 318 आदमियों की एक सेना इकट्ठी की और उनका पीछा किया।

यह अपने आप में एक दिलचस्प कहानी है। काश हमारे पास इसे देखने के लिए अधिक समय होता। लेकिन मैं चाहता हूँ कि हम यह देखें कि जैसे ही इब्राहीम बाहर जाता है और इन चार राजाओं को सफलतापूर्वक हरा देता है और लूट और लूत को पुनः प्राप्त कर लेता है, ध्यान दें कि सलेम के राजा मलिकिसिदक की रहस्यमयी आकृति क्या कहती है, जब वह बाहर आता है और इब्राहीम का फिर से स्वागत करता है।

यह अपने आप में एक संपूर्ण सबक की गारंटी देता है। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप सुनें कि सलेम का यह राजा क्या कहता है। वह कहता है, परमप्रधान परमेश्वर, जो स्वर्ग और पृथ्वी का रचयिता है, उसकी ओर से अब्राम धन्य हो, और परमप्रधान परमेश्वर की स्तुति हो, जिस ने तेरे शत्रुओं को तेरे हाथ में कर दिया।

भगवान के इस विचार ने शत्रुओं का उद्धार किया। मलिकिसिदक और इब्राहीम दोनों मानते हैं कि यद्यपि इब्राहीम ने लड़ाई की थी, यह परमेश्वर के कारण था कि वे इस लड़ाई को सफलतापूर्वक जीतने में सक्षम थे। तो, एक और जगह जहां मैं जाऊंगा और हम देख सकते हैं, हमने निर्गमन 14 में मिस्त्रियों पर भगवान की विजय पर एक संक्षिप्त नज़र डाली, जिसे निर्गमन 15 में मनाया गया था।

हम बाद में वापस आएँगे और देखेंगे कि हालाँकि अभी हम चरण 1 पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं जहाँ ईश्वर इज़राइल के मांस और रक्त के दुश्मनों के खिलाफ लड़ाई जीतता है। बाद में जब हम चरण 4 और 5 के बारे में बात कर रहे हैं और हम लड़ाई की तीव्रता और तीव्रता के बारे में बात कर रहे हैं ताकि यह आध्यात्मिक शक्तियों और अधिकार की ओर निर्देशित हो, हम उस आध्यात्मिक लड़ाई की झलक देखने जा रहे हैं, भले ही पुराने में टेस्टामेंट मनुष्यों को इसमें आमंत्रित नहीं किया गया है क्योंकि वे नए टेस्टामेंट में, प्लेग जैसी जगह पर हैं। लेकिन हम रुकेंगे और वापस आएँगे और विपत्तियों को हमारी आध्यात्मिक शक्तियों के लिए मिस्र के देवताओं के खिलाफ भगवान की लड़ाई के रूप में देखेंगे।

लेकिन अभी, मैं दूसरा उदाहरण लेना चाहूँगा और पुराने नियम में चरण 1 के उदाहरणों का एक पूरा समूह है, इसलिए मैं इसे चित्रित करने के लिए बस कुछ को चुन रहा हूँ। आइए उत्पत्ति 10 पर एक नज़र डालें। हमने जेरिको की लड़ाई के बारे में थोड़ी बात की, लेकिन विजय की सभी लड़ाइयाँ इस चरण 1 से गहराई से जुड़ी हुई हैं। यहोशू 10 शुरू होता है, अब यरूशलेम के एडोनिज़ेडेक राजा ने सुना कि यहोशू ने ए पर कब्जा कर लिया है और इसे पूरी तरह से नष्ट कर दिया।

हम चरण 2 में ए में वापस आएँगे। ए और उसके राजा के साथ वैसा ही करेंगे जैसा उसने जेरिको और उसके राजा के साथ किया था। और गिबोन के लोगों ने इस्राएल के साथ शांति की संधि की थी और उनके सहयोगी बन गए थे। अब यह उस संबंध में दिलचस्प है जिसके बारे में हमने पहले बात की थी कि युद्ध में जाने से पहले या देश के लोगों के संबंध में कुछ भी करने से पहले भगवान से पूछताछ करें।

और इसलिए, यहोशू 10 हमें यहोशू 9 में जो हुआ उसकी याद दिला रहा है जो ए की लड़ाई के बाद हुआ था, ठीक है आप उन्हें राजनयिक कहेंगे, बासी भोजन के साथ थके हुए घोड़ों पर दिखाई देंगे और वे कहते हैं कि हम दूर से आए हैं बहुत दूर है और हम आपके साथ एक संधि करना चाहेंगे। किसी तरह, वे उस अंतर को जानते हैं जो हमने व्यवस्थाविवरण 20 में देखा था कि इसराइल को भूमि के बाहर के लोगों के विपरीत भूमि के लोगों के साथ कैसा व्यवहार करना था। और यहोशू उनके साथ एक संधि में प्रवेश करता है, भले ही पद 8 की तरह वह पूछता है कि आप कौन हैं और कहां से आए हैं और वे कहते हैं कि आपके सेवक आपके भगवान की प्रसिद्धि के कारण बहुत दूर देश से आए हैं।

क्योंकि हमने उसके विषय में सुना है कि उसने मिस्र में क्या-क्या किया, और एमोरियों के दोनों राजाओं के साथ क्या-क्या किया। इसलिए, उन्होंने उससे दूर होने के बारे में झूठ बोला और यहोशू आगे बढ़कर उनके साथ यह समझौता करता है। फिर बाद में अध्याय में, यह यहोशू की निंदा करता है क्योंकि इसमें कहा गया है कि उसने प्रभु से पूछताछ नहीं की। इसलिए उसने वह नहीं किया जो उसे करना चाहिए था, उसने प्रभु से पूछताछ नहीं की। उसने यह संधि की, उसे इसका पालन करना पड़ा।

इससे बाद में इज़राइली इतिहास में परेशानी होगी लेकिन यह इस बात का बहाना बन जाता है कि एडोनिज़ेडेक कनानी शहर राज्यों के गठबंधन को एक साथ क्यों इकट्ठा करता है। वैसे, इस

समयावधि की थोड़ी सी पृष्ठभूमि से पता चलता है कि कनान एक एकीकृत देश नहीं था, बल्कि शहर राज्यों के एक पूरे समूह से बना था, जिनमें से प्रत्येक का अपना शासक था। उन्हें अक्सर राजा कहा जाता था। लेकिन अब इज़राइल से इस आम खतरे का सामना करते हुए, एडोनिज़ेडेक ने हेब्रोन, यारमाउथ, आकीश, एग्लोन शहरों के बीच एक गठबंधन बनाया है। वह कहता है कि आओ और गिबोन पर आक्रमण करने में मेरी सहायता करो क्योंकि उसने यहोशू और इस्राएलियों के साथ मेल कर लिया है।

यह इज़राइल को युद्ध में खींचता है। यह वह प्रसिद्ध लड़ाई है जहां भगवान दिन को लम्बा खींचते हैं, इस बात पर बहुत बहस होती है कि यहां क्या चल रहा है, हमारे उद्देश्यों के लिए उस पर ध्यान देना अनावश्यक है लेकिन दिन लम्बा हो जाता है और यह इज़राइल को दक्षिणी कनान की सेनाओं को पूरी तरह से हराने की अनुमति देता है।

लेकिन यहां वह कविता है जिस पर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं जब वे, अर्थात्, कनानी, बेथ होरोन से अजेका की ओर जाने वाली सड़क पर इज़राइल से पहले भाग गए थे। यहोवा ने उन पर बड़े बड़े ओले बरसाए, और इस्राएलियों की तलवारों से मरने वालों से अधिक लोग ओलों से मरे।

तो फिर से हमारे सामने ऐसी स्थिति है जहां इज़राइल युद्ध में लगा हुआ है लेकिन वे मानते हैं कि दिन को लम्बा खींचकर और ओले भेजकर भगवान ही यहां असली विजेता हैं। वह उन्हें जीत दिला रहे हैं।

जब आप पुराने नियम को पढ़ते हैं तो अपने स्वयं के पढ़ने में ध्यान देने योग्य एक और बात, ध्यान दें कि भगवान कितनी बार प्रकृति की शक्तियों का उपयोग अपने हथियारों के रूप में करते हैं, चाहे वह मूसलाधार बारिश के तूफान भेज रहे हों, जिससे रथ फंस जाएं। कीचड़ या कुछ भी। ईश्वर ही है जो इन युद्धों का अंतिम विजेता है।

यह विषय न्यायाधीशों की पुस्तक में भी पाया जाता है। हालाँकि न्यायाधीश आम तौर पर बहुत ही संदिग्ध चरित्र वाले होते हैं, न्यायाधीशों की पुस्तक का एक दिलचस्प विषय यह है कि कैसे भगवान अत्यधिक दोषपूर्ण व्यक्तियों के बावजूद भी जीत प्रदान करते हैं। जैसे-जैसे आप शुरुआत से ओलीएल और एहुद और दबोरा जैसे लोगों से आगे बढ़ते हैं, फिर आप विशेष रूप से सैमसन पर आते हैं, वे बदतर और बदतर होते जाते हैं। सैमसन कुछ भी अच्छा नहीं करता है लेकिन फिर भी भगवान पलिशियों पर विजय पाने के लिए उसका उपयोग करता है।

लेकिन मैंने सोचा कि मैं एक उदाहरण के तौर पर एहुद की कहानी पढ़ूंगा जो छोटी है और उतनी प्रसिद्ध नहीं है, भले ही वह थोड़ी सी है, जैसा कि आप देखेंगे, अंधकारपूर्ण है। तो, यह न्यायाधीश अध्याय 3 पद 12 है जहां यह कहता है, इस्राएलियों ने फिर यहोवा की दृष्टि में बुरा किया। और क्योंकि उन्होंने यह बुराई की, इसलिये यहोवा ने मोआब के राजा एग्लोन को इस्राएल पर अधिकार देने दिया। इसलिए एग्लोन ने संभवतः जेरिको पर कब्ज़ा करते हुए इज़राइल के दक्षिणी हिस्से में घुसपैठ की। वैसे एग्लोन नाम का मतलब मोटा बछड़ा होता है। संभवतः यही कहानी में चलता है।

अम्मोनियों और अमालेकियों को अपने साथ मिलाकर एग्लोन ने आकर इस्राएल पर आक्रमण किया और उन्होंने पाम्स नगर पर अधिकार कर लिया। इस्राएली 18 वर्ष तक मोआब के राजा एग्लोन के अधीन रहे। इस्राएलियों ने फिर यहोवा की दोहाई दी, और उस ने बिन्यामीनी गेरह के पुत्र एहूद को, जो बाएँ हाथ का था, उनका छुड़ानेवाला दिया। इस्राएलियों ने उसे मोआब के राजा एग्लोन के पास कर देकर भेजा।

एहूद ने लगभग एक हाथ लम्बी दोधारी तलवार बनवाई थी, जिसे उस ने अपने वस्त्र के नीचे दाहिनी जाँघ पर बान्ध लिया था। उसने मोआब के राजा एग्लोन को कर दिया, जो बहुत मोटा आदमी था। यहां बस एक विराम, आपको याद होगा कि मैंने भौतिक विवरण बहुत विरल होने के बारे में क्या कहा था। जब यह वहां होता है, तो यह किसी को चित्रित करने या कथानक में शामिल करने के माध्यम से कहानी के लिए प्रासंगिक होता है। यहाँ इसे बाएँ हाथ के रूप में वर्णित किया गया है जो प्राचीन निकट पूर्व और वास्तव में बाद में प्राचीन काल के लोगों के लिए बहुत ही असामान्य है। मेरा मतलब रोमन शब्द से है, बाएँ हाथ के लिए लैटिन शब्द भयावह है। मुझे लगता है कि हमें बताया जा रहा है कि वह सुरक्षा से परे कैसे पहुंच गया। सुरक्षा वह नहीं है जो पहले थी, जो आज है। इसलिए, संभवतः उसकी जाँच की गई क्योंकि हर कोई दायाँ हाथ उसकी बायीं जाँघ पर रखता है, उसकी दायीं जाँघ पर नहीं। इसलिए, वह हत्या करने में सक्षम था, जैसा कि हम देखेंगे।

अतः एहूद ने कर चुकाने के बाद उन लोगों को, जो कर लेकर आए थे, विदा कर दिया। परन्तु गिलगाल के पास की पत्थर की मूरतों के पास पहुंचकर वह आप ही एग्लोन के पास लौट गया और कहा, हे महाराज, मेरे पास तेरे लिये एक गुप्त सन्देश है। राजा ने अपने अनुचरों से कहा हमें छोड़ दो और वे सब चले गये। अटकलें लगाई जा रही हैं कि एग्लोन ने एहूद को क्यों जाने दिया। कुछ विद्वानों का मानना है कि वह एहूद के साथ रोमांटिक बातचीत का निमंत्रण सुन रहा है, यही कारण है कि वे उसे बाथरूम क्षेत्र में पाते हैं।

जब एहूद ऊपर के कमरे में अकेला बैठा था, तब वह उसके पास आया, और उस ने कहा, मेरे पास तुम्हारे लिये परमेश्वर की ओर से एक सन्देश है। और राजा अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ। एहूद ने अपना बायाँ हाथ बढ़ाया, अपनी दाहिनी जाँघ से तलवार खींची, और उसे राजा के पेट में घोंप दिया, यहाँ तक कि ब्लेड के बाद हैंडल भी धँस गया और उसकी आंतें खाली हो गईं। एहूद ने तलवार बाहर नहीं निकाली और चर्बी उसके ऊपर बन्द हो गई।

तब एहूद ओसारे से बाहर गया, और अपने पीछे ऊपरी कमरे के द्वार बन्द करके ताला लगा दिया। उनके जाने के बाद नौकर आए और ऊपरी कमरे के दरवाजे बंद पाए, उन्होंने कहा कि वह महल के भीतरी कमरे में आराम कर रहे होंगे, उन्होंने शर्मिंदगी की हद तक इंतजार किया, लेकिन जब उन्होंने कमरे के दरवाजे नहीं खोले तो उन्होंने कहा कि वह महल के भीतरी कमरे में आराम कर रहे होंगे। एक चाबी ली और उन्हें खोल दिया। वहाँ उन्होंने अपने स्वामी को मृत अवस्था में भूमि पर गिरा हुआ देखा।

जब वे प्रतीक्षा कर रहे थे तो एहूद भाग गया। वह पत्थर की मूर्तियों के पास से गुजरा और सेराह की ओर भाग गया। वहाँ पहुँचकर उसने एम्रैम के पहाड़ी देश में नरसिंगा फूँका, और इस्राएली उसके संग पहाड़ों से नीचे उतरे, और वह उनका अगुवा हुआ। उसने आज्ञा दी, मेरे पीछे चलो, क्योंकि यहोवा ने तुम्हारे शत्रु मोआब को तुम्हारे हाथ में कर दिया है। इसलिये उन्होंने उसका पीछा किया और यरदन के घाटों पर, जो मोआब की ओर जाते थे, कब्ज़ा कर लिया। उन्होंने उस समय किसी को भी पार जाने की अनुमति नहीं दी। उन्होंने लगभग 10,000 मोआबियों को मार डाला, जो सभी हृष्ट-पुष्ट और शक्तिशाली थे। एक भी नहीं बचा। उस दिन मोआब को इस्राएल के अधीन कर दिया गया और देश में 80 वर्ष तक शांति रही।

इसलिए फिर से, इस कथन पर प्रकाश डालिए क्योंकि प्रभु ने मोआब को आपके शत्रु को आपके हाथों में सौंप दिया है। अब योद्धा के रूप में भगवान इनमें से कई कहानियों में आंशिक रूप से कुछ हद तक दब गए हैं, मैं तर्क दूंगा, क्योंकि इस समय अवधि के दौरान न्यायाधीशों की पुस्तक ऐसे लोगों का वर्णन कर रही है जो नैतिक रूप से भ्रष्ट हैं। वे राजनीतिक रूप से खंडित हैं और वे आध्यात्मिक रूप से भ्रमित हैं लेकिन फिर भी भगवान ही हैं जो न्यायाधीशों के समय में यह जीत प्रदान कर रहे हैं।

2 शमूएल 5:13 या 17 से एक और उदाहरण और उसके बाद हम उदाहरणों को गुणा कर सकते हैं लेकिन मैं कई अलग-अलग समयावधियों में से कुछ चुनना चाहता था। यह दाऊद है और यह कहता है, कि जब पलिशतियों ने सुना, कि दाऊद इस्राएल का राज्य करने के लिये अभिषिक्त हुआ है, तब वे पूरी शक्ति से उसकी खोज में निकले। परन्तु दाऊद ने इसके विषय में सुना, और गढ़ में गया। अब पलिशती आकर रपाईम नाम तराई में फैल गए थे। तब दाऊद ने यहोवा से पूछा, क्या मैं जाकर पलिशतियों पर आक्रमण करूँ? क्या तुम उन्हें मेरे हाथ सौंपोगे? जाओ, मैं निश्चय पलिशतियों को तुम्हारे हाथ में कर दूंगा। इसलिये, दाऊद बालपरासीम को गया और वहाँ उसने उन्हें हरा दिया। उस ने कहा, जल की नाई यहोवा मुझ से पहिले मेरे शत्रुओं पर टूट पड़ा है। इसलिए उस स्थान का नाम बालपराज़िम रखा गया। फ़िलिस्तियों ने अपनी मूर्तियाँ वहीं छोड़ दीं और दाऊद और उसके आदमी उन्हें ले गए।

पलिशती एक बार फिर आकर रपाईम नाम तराई में फैल गए। तब दाऊद ने यहोवा से पूछा, और उस ने उत्तर दिया, सीधे न चढ़, परन्तु उनके पीछे से घूमकर चिनार के वृक्षों के साम्हने उन पर चढ़ाई कर। जैसे ही तुम चिनार के पेड़ों की चोटियों से मार्च की आवाज़ सुनोगे तो तेजी से आगे बढ़ो क्योंकि इसका मतलब होगा कि यहोवा पलिशती सेना पर हमला करने के लिए तुम्हारे सामने चला गया है।

इसलिये दाऊद ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार किया, और गिबोन से गेजेर तक पूरे मार्ग में पलिशतियों को मार डाला। इसलिए, चिनार के पेड़ की सरसराहट सुनने तक प्रतीक्षा करें क्योंकि इसका मतलब है कि स्वर्गीय सेना आपके सामने आने वाली है और फिर आप जीत हासिल करेंगे।

तो फिर, चरण 1 ईश्वर इज़राइल के हाड़-मांस के शत्रुओं से लड़ता है और इसके अनगिनत उदाहरण हैं।

लेकिन ऐसे उदाहरण भी हैं, बहुत ज्यादा नहीं, लेकिन अभी भी ऐसे उदाहरण हैं जिन्हें मैं चरण 2 कह रहा हूँ जो कि ईश्वर इज़राइल से लड़ता है। ठीक है, तो वे उदाहरण क्या हैं? खैर, आइए विजय के साथ फिर से शुरुआत करें और ध्यान दें कि जेरिको की लड़ाई के ठीक बाद ऐ की लड़ाई आती है। अब ऐ का स्थान जेरिको के पश्चिम में है, अनिवार्य रूप से वादा किए गए देश में पहले आंदोलन में क्या होता है। तो जेरिको और अब ऐ और इस कहानी को समझने के लिए आपको यह भी जानना चाहिए कि ऐ का हिब्रू में क्या मतलब होता है। इसका अर्थ है डंप करना, बताना, बर्बाद करना। जाहिर तौर पर यह कोई बड़ा शहर नहीं है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने अभी-अभी चारदीवारी वाले शहर जेरिको को हराया है। परमेश्वर ने वह विजय प्राप्त की है। उन्होंने शहर के चारों ओर मार्च किया है। 7वें दिन वे इसकी 7 बार परिक्रमा करते हैं। वे तुरही बजाते हैं जो भगवान के आने की घोषणा करता है और दीवारें ढह जाती हैं। वे शहर लेते हैं।

अब वे ऐ, डंप सिटी तक जाते हैं और यहोशू पूरी सेना को ऊपर नहीं भेजता है। वह नहीं सोचता कि उसे इसकी आवश्यकता है। वह बस एक छोटी सी सेना भेजता है और होता यह है कि वे हार जाते हैं। वे लौट आए, और यहोशू शोक में डूबा हुआ था, और आश्चर्य कर रहा था, और कह रहा था, हे परमेश्वर, ऐसा क्यों हुआ? भगवान कहते हैं कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि तुमने युद्ध के नियमों का उल्लंघन किया। याद रखें कि आप अपने भले के लिए, अपने फायदे के लिए लूट नहीं कर सकते।

जैसा कि यह पता चला है, हमें बहुत कुछ के माध्यम से पता चला है कि अचन नाम के एक व्यक्ति ने लूट का कुछ हिस्सा ले लिया था और उसे अपने तम्बू में दफन कर दिया था। उस उल्लंघन के कारण, परमेश्वर इस्राएल को युद्ध जीतने नहीं देगा। वे लड़ाई हार गये। इसलिए, अचन को बाहर निकालने के बाद उसे मार डाला गया और दफना दिया गया। वे उस घाटी का नाम आचोर की घाटी, मुसीबत की घाटी रखते हैं। फिर वे फिर से ऐ तक गए और उन्होंने वह लड़ाई जीत ली, यह फिर से एक उदाहरण है कि अवज्ञा के कारण परमेश्वर इस्राएल के विरुद्ध लड़ता है।

दूसरा उदाहरण थोड़ा बाद में शमूएल की युवावस्था के समय 1 शमूएल 4 और 5 की पुस्तक के पहले अध्याय में आता है। तो इस समय, एली न्यायाधीश है। एली के दो दुष्ट बेटे होप्री और पीनहास हैं, जो सेना का नेतृत्व कर रहे हैं। वे पलिशियों के विरुद्ध युद्ध करने जा रहे हैं।

वे युद्ध में प्रवेश करते हैं और हार जाते हैं और हम पहले से ही जानते हैं कि ये लोग दुष्ट हैं। वे बलि के लिए चढ़ाया जाने वाला मांस ले रहे हैं। वे उन महिलाओं के साथ सो रहे हैं जो तम्बू में काम करती हैं। ये बुरे आदमी हैं। लेकिन वे अपना सिर खुजलाते हैं और कहते हैं, ओह, हम वाचा के सन्दूक को भूल गए जो इस बात का संकेत है कि वे कितने आध्यात्मिक हैं। लेकिन साथ ही, हमें यह संकेत भी मिलता है कि वे विश्वास और विश्वास के कारण ऐसा नहीं कर रहे हैं, बल्कि एक तरह की सोच के कारण हम उस हथियार, उस शक्ति आधार को भूल गए हैं इसलिए हमें इसे लाने की जरूरत है ताकि हम पलिशियों को हरा सकें।

इसलिए, उन्हें सन्दूक मिल जाता है और भले ही सन्दूक उनके पाप के कारण वहां है, भगवान इसराइल को हारने की अनुमति देते हैं और सन्दूक को पलिशी शहर में ले जाया जाता है जहां

इसे उनके मुख्य देवता दागोन के साथ मंदिर में रखा जाता है। ऐसा लगता है मानो डैगन ने शायद यहोवा पर विजय प्राप्त कर ली है। यह अक्सर ऐसा होता है कि प्राचीन निकट पूर्वी लोग, कम से कम उनके बीच के बहुदेववादी, सोचते थे कि हमारा ईश्वर आपके ईश्वर से अधिक शक्तिशाली है और आपके ईश्वर को हराने में सक्षम है।

लेकिन निश्चित रूप से, कहानी यह कहती है कि, अगले दिन वे मंदिर में आते हैं और डैगन की मूर्ति यहोवा के सामने झुकी हुई होती है। उन्होंने उसे बार-बार वापस रखा, इस बार सिर और हाथ तोड़ दिए गए और शहरों में फैली बीमारी के साथ-साथ उन्हें एहसास हुआ कि पलिशियों ने इसराइल को इसलिए नहीं हराया क्योंकि यहोवा कमजोर था, बल्कि इसलिए क्योंकि इसराइल पापी था। इसलिए, वे सन्दूक को फिर से वापस भेजते हैं।

इस तथ्य का दूसरा उदाहरण कि ऐसा नहीं है कि ईश्वर हमेशा इसराइल के साथ लड़ेगा जोशुआ 5 फिर, क्या आप हमारे लिए हैं या हमारे दुश्मनों के लिए हैं? नहीं, न ही मैं तुम्हारा भगवान हूँ जो तुम्हारी इच्छानुसार कार्य करूंगा।

तो अब तीसरा उदाहरण सबसे नाटकीय है और हम यहां 586 ईसा पूर्व में यरूशलेम की बेबीलोनियाई हार के बारे में बात कर रहे हैं जो निर्वासन की शुरुआत करती है। इसलिए, परमेश्वर वर्षों से अपने लोगों को चेतावनी दे रहा था कि उन्हें पश्चाताप करने की आवश्यकता है या वह उन्हें त्याग देगा, और वह मंदिर को त्याग देगा।

हमें यहजेकेल 9-11 में मंदिर के परित्याग की एक तस्वीर मिलती है जब भगवान की महिमा बढ़ती है और करूब आंगन में उनसे मिलते हैं। फिर वह पूर्व की ओर बढ़ना शुरू करता है और आखिरी बार जब आप भगवान को देखते हैं तो वह जैतून पर्वत के ऊपर होता है जब वह यरूशलेम की हार की तैयारी के लिए मंदिर को छोड़ रहा होता है।

संभवतः हम इस बिंदु को स्पष्ट करने के लिए बहुत सारे पाठ पढ़ सकते हैं, लेकिन मैं विलापगीत की पुस्तक की ओर मुड़ना चाहता हूँ। अब यरूशलेम के विनाश और मंदिर के विनाश के जवाब में विलापगीत लिखा गया था। यह एक दिलचस्प किताब है जिसे अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है क्योंकि यह छोटी है और इसे अंग्रेजी बाइबिल में जेरेमिया और ईजेकील की बड़ी किताबों के बीच रखा गया है।

लेकिन विलाप पाँच अलग-अलग कविताएँ हैं जिनमें से प्रत्येक बेबीलोनियों द्वारा यरूशलेम के विनाश पर शोक व्यक्त करती है। मैं सभी विवरणों में नहीं जाऊंगा लेकिन साहित्यिक दृष्टिकोण से यह आकर्षक है क्योंकि यदि आप ध्यान देंगे तो चार अध्यायों में 22 छंद हैं। मध्य अध्याय में 66 छंद हैं जो निश्चित रूप से 22 से तीन बार विभाज्य हैं। यदि आप इसे हिब्रू में पढ़ते हैं और जानते हैं कि हिब्रू भाषा की वर्णमाला में 22 अक्षर हैं। प्रत्येक अध्याय एक एक्रोस्टिक का एक रूप है जो एक कविता लिख रहा है जो एक कविता से शुरू होती है जो एलेफ से शुरू होती है जो हिब्रू वर्णमाला का पहला अक्षर है, फिर बीट, फिर जिमेल, फिर डेलट से ताव तक ।

तो ऐसा पहले अध्याय में होता है, फिर दूसरे अध्याय में। फिर तीसरे अध्याय में 66 है। तो पहले तीन छंद अलेफ से शुरू होते हैं, अगले तीन छंद तव के माध्यम से बेत से शुरू होते हैं। फिर चौथा अध्याय, अध्याय 1 और 2 के पैटर्न पर वापस चलते हुए 22 श्लोक।

फिर पांचवें अध्याय में 22 श्लोक हैं लेकिन यह एक्रोस्टिक नहीं है। यह वास्तव में काफी उत्कृष्ट है क्योंकि एक्रोस्टिक्स, इसका एक उद्देश्य शायद व्यवस्था दिखाना है, लेकिन विलाप की पुस्तक सब कुछ बहाल होने के साथ समाप्त नहीं होती है, बल्कि कवि ईश्वर से उन्हें बहाल करने के लिए कहता रहता है, जब तक कि वह यह नहीं कहता कि आप हमें हमेशा के लिए भूल गए हैं।

तो, एक्रोस्टिक बिल्कुल अंत में टूट जाता है, मैं दूसरे अध्याय से एक खंड पढ़ना चाहता हूँ। तो, विलापगीत अध्याय 2 कहता है, कैसे यहोवा ने सिथ्योन की बेटी को अपने क्रोध के बादल से ढांप दिया है। उसने इस्राएल के वैभव को स्वर्ग से पृथ्वी पर गिरा दिया है। उसने अपने क्रोध के दिन में अपने चरणों की चौकी को स्मरण नहीं किया। प्रभु ने बिना दया के याकूब के सारे घरों को निगल लिया। उसने अपने क्रोध में यहूदा की बेटी के गढ़ों को ढा दिया है। उसने उसके राज्य और हाकिमों को अनादरपूर्वक भूमि पर गिरा दिया है। उसने भयंकर क्रोध में आकर इस्राएल का हर सींग काट डाला है। उसने शत्रु के निकट आते ही अपना दाहिना हाथ हटा लिया है। वह याकूब में धधकती आग की तरह जल गया है जो उसके चारों ओर की हर चीज़ को भस्म कर देती है। शत्रु की भाँति उसने अपना धनुष चढ़ा लिया है। उसका दाहिना हाथ तैयार है। एक शत्रु की तरह, उसने उन सभी को मार डाला है जो देखने में अच्छे लगते हैं। उस ने सिथ्योन की बेटी के तम्बू पर अपना क्रोध आग की नाई भड़काया है; यहोवा शत्रु के समान है। उसने इस्राएल को निगल लिया है, उसने उसके सभी महलों को निगल लिया है और उसके गढ़ों को नष्ट कर दिया है

और विलापगीत 2 इस प्रकार बताता है कि परमेश्वर एक शत्रु की तरह यरूशलेम के विरुद्ध आ रहा है। जिसे मैं चरण 2 कह रहा हूँ, उसे फिर से समझा रहा हूँ, जब इसराइल अवज्ञाकारी होता है तो भगवान एक योद्धा के रूप में उनके खिलाफ आते हैं।

हमने पहले इस बारे में बात की थी कि व्यवस्थाविवरण की पुस्तक एक वाचा नवीनीकरण पाठ है और हमने इस बारे में बात की थी कि कैसे कानून ने संधि वाचा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। खैर, एक संधि के साथ-साथ बाइबिल अनुबंधों में, कानून का पालन आशीर्वाद और शाप द्वारा किया जाता है। यदि आप कानून का पालन करेंगे तो निम्नलिखित आशीर्वाद आपके साथ घटित होंगे। यदि तुम कानून का उल्लंघन करोगे तो ये शाप तुम्हारे विरुद्ध आयेंगे।

और व्यवस्थाविवरण 28 आशीर्वाद और शाप की सूची का एक उदाहरण है जैसा कि व्यवस्थाविवरण 27 है। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप ध्यान दें कि इनमें से कुछ आशीर्वाद और शाप युद्ध से कैसे संबंधित हैं। इसलिए, व्यवस्थाविवरण 28 श्लोक 7 कहता है कि यदि तुम मेरी बात मानोगे तो प्रभु यह देगा कि जो शत्रु तुम्हारे विरुद्ध उठेंगे वे तुम्हारे साम्हने हार जाएंगे। वे एक दिशा से तुम्हारे पास आएंगे, परन्तु सात दिशाओं में तुम्हारे पास से भाग जाएंगे। जबकि श्लोक 15 शापों को बदलता है, यह कहता है कि यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा नहीं मानते हो और उसके सभी आदेशों और आदेशों का ध्यानपूर्वक पालन नहीं करते हो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ तो ये सभी शाप तुम पर आएँगे और तुम पर हावी हो जाएँगे। श्लोक 25 में यह भी शामिल

है, प्रभु तुम्हें तुम्हारे शत्रुओं के सामने पराजित कर देगा। तुम एक दिशा से उन पर आओगे, परन्तु सात दिशा से उनके सामने से भाग जाओगे। और तुम आतंक की वस्तु बन जाओगे। तेरी लोथें पक्षियों और बनैले पशुओं का आहार होंगी, और उन्हें डरानेवाला कोई न होगा।

और यह उस तरह से परमेश्वर के लोगों को न्याय के बारे में चेतावनी देता रहता है जो कानून का उल्लंघन करने पर उन पर आएगा। और फिर, याद रखें कि भविष्यवक्ता लोगों को आने वाले न्याय के बारे में कैसे चेतावनी देंगे। विशेष रूप से यिर्मयाह जैसा भविष्यवक्ता व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में गहराई से पारंगत है, और वह जो कर रहा है वह अनिवार्य रूप से उन्हें याद दिला रहा है कि भगवान ने उन्हें पहले ही क्या कहा था कि जब तक वे पश्चाताप नहीं करते कि उन्हें दंडित किया जाएगा।

इसीलिए मैं अक्सर भविष्यवक्ताओं को अनुबंध वकील कहता हूँ। जब इस्राएल कानून तोड़ता है तो परमेश्वर उनके खिलाफ मामला पेश करने और उन्हें पश्चाताप करने की चेतावनी देने के लिए अपने भविष्यवक्ताओं को भेजता है।

ठीक है, तो हमने चरण 1 को देखा है, ईश्वर इज़राइल के हाड़-मांस के शत्रुओं से लड़ता है। हमने अभी-अभी इज़राइल के विरुद्ध ईश्वर की लड़ाई का दूसरा चरण पूरा किया है। हम देखेंगे कि यह पुराने नियम का अंतिम चरण नहीं है। अब हम अपना ध्यान चरण 3 की ओर केंद्रित करने जा रहे हैं, जिसमें यह देखना है कि बाद के कुछ भविष्यवक्ता इस बारे में बात करेंगे कि कैसे भगवान एक योद्धा के रूप में उन्हें उनके उत्पीड़कों से बचाने के लिए आएंगे।

यह ईश्वर एक योद्धा है पर अपनी शिक्षा में डॉ. टेम्पर लॉन्गमैन हैं। यह सत्र 3, चरण 1 है: ईश्वर इज़राइल के मांस और रक्त शत्रुओं से लड़ता है; चरण 2: ईश्वर इस्राएल से लड़ता है।